सदीनामा

सोच में इजाफे की पत्रिका www.sadinama.in ISSN : 2454-2121

वर्ष-18 ❑ अंक - 8 ❑ 1 से 30 जून, 2018 ❑ पृष्ठ- 24 ★ RNI No. WBHIN/2000/1974 ❑ मूल्य - 5.00 रूपये

इस माह की पेंटिग

सम्पादकीय

कला, पेंटिंग, बाजार और निवेश

'पेंटिंग' कहने से जो तस्वीर सामने आती है, वह ब्लैक पे व्हाइट, रंगीन, कोलाज या कुछ इसी तरह का हो सकता है। कला का बाजार पूँजी निवेश का बड़ा साधन है पर हमारे यहाँ आम जन में इसका प्रचार-प्रसार नहीं है। आजकल देशी कलाकारों की कलाकृतियों की बाहर बहुत मांग है। अकेले कोलकाता को ही देखे तो तीन दर्जन के करीब कला-गैलरियां हैं, सरकारी और निजी दोनों। इनमें लगने वाली प्रदर्शनियों की संख्या भी उसी हिसाब से बहुत है और इनमें आने वाले दर्शक और ग्राहक दोनों भी कम नहीं। इन पूरी भागीदारी को देखा जाये तो आम जन की भागीदारी करीब करीब एक प्रतिशत से भी कम है। आज बड़े घरानों के पास करोड़ों की कलाकृतियाँ हैं, जिनमें सभी असली हैं। ये असली क्या है ? हर पेंटिंग को खरीदते समय कलाकार हमें दो चीजें देता है, जो पेटिंग के साथ जरूरी है। एक पेंटिंग का सर्टिफिकेट कि यह असली है और उसके हस्ताक्षर, दूसरा पेटिंग की पक्की रसीद। इतना साफ साफ होने के बावजूद यह निवेश का साधन नहीं बन पा रही है। इस व्यवसाय के साथ अस्मिता और पूंजी दोनों जुड़े हैं।

कई वर्ष पहले हमारे लिए हावड़ा के अमरनाथ सिंह (आज नासिक में हिन्दी विभाग में कार्यरत है) ने गणेश सिंह नाम के एक व्यक्ति का इंटरव्यू लिया था। जो उस समय कलाकृत्तियों का संरक्षित सुरक्षित और ठीक करने के लिए एक गैलरी बना रहे थे। इतने दिन बाद एक दिन एक बड़े कला आयोजन के पोस्टर में उनका नाम दिखा जो आज एक बड़ा नाम हैं। आर्ट गैलरी खोलने वाले कोई घाटे में नहीं। कोलकाता के वरिष्ठ कवि एवं उनकी कलाकार पत्नी के पुत्र ने एक आर्ट गैलरी शुरु की जो आज कोलकाता की प्रमुख गैलरियों में एक है। वैसे तो सभी बड़े शहरों में गैलरियाँ हैं जो कलाकारों की प्रदर्शनी लगाकर उनकी कलाकृतियों को लेती हैं और बाद में बेचती भी हैं। कई बार देखा गया है कि ये ही गैलरियां नये कलाकारों से प्रसिद्ध कलाकारों की कृत्तियों की डुप्लीकेट भी बनवाती हैं, पकड़ी जाती हैं। अब हमें कला में निवेश करना है तो हम सीधे कलाकारों के ये कलाकृत्ति खरीदें। अपने पूरे जीवन में कलाकारों जितनी भी कलाकृत्तियाँ बनाता है सबका डोक्यूमेंट रहता है और बहुत ज्यादा बनाता भी नहीं। हमारे शहर के कलाकार बदलेव राज पनेसर इतने प्रोफेशनल थे कि कागज के चिरकुट पर बनी अपनी कलाकृति भी किसी को नहीं देते थे। ऊपर से ये कि आप जब उनसे मिलते तो आपको कागज देकर पूछते थे, कोई लाइन खींचें, फिर जो बनाना है, बताएँ वे और बना देते थे।

ज्यादा से ज्यादा लोग कला को समझें और इसे रोजी-रोटी से जोड़े। उसको आस्मिता से जोड़े और पैसे भी कमायें। अब इस व्यवसाय के लिए कैसे सिखायें। हमने इस महीने से एक कलाकृत्ति को फोकस किया है। यह कलाकृति हमारे कार्यालय में अगले महीने की 25 तारीख तक रखी रहेगी। इसका न्यूनतम मूल्य बिडिंग से तय होगा। जो सज्जन अधिकतम मूल्य देंगे वे हमें फोन करके बता दें। अत्यधिक मूल्य आँकने वाले को पेंटिंग दे दी जायेगी साथ में प्रमाण पत्र और रसीद भी।

सम्पादक मण्डल

उप-संपादक : तितिक्षा तथा पापिया भट्टाचार्य

संपादकीय सलाहकार : यदुनाथ सेउटा

संपादक : जितेन्द्र जितांशु

संरक्षक मंडल

आरती चक्रवर्ती, एच॰ विश्ववाणी

राजेन्द्र कुमार रूईया (अमेरिका)

तथा शिवेन्द्र मिश्र

सभी अवैतनिक हैं।

❑ श्रद्धांजलि ❑

हिन्दी के निर्भीक सेनानी तथा वरिष्ठ साहित्यकार

बालकवि बैरागी का स्मरण और उन्हें श्रद्धांजलि!

नीमच के साहित्यकार एवं एक शानदार कवि, एक बेमिसाल इंसान और एक लोकप्रिय जननेता बालकवि बैरागी का निधन 18 मई को हो गया। उनका जन्म 10 फरवरी 1931 को हुआ था।

मूलत: मनासा क्षेत्र के बालकवि बैरागी साहित्य और कविता के साथ राजनीति के क्षेत्र में भी सक्रिय रहे। वे राज्यसभा के सदस्य रहे।

इस सरस्वती पुत्र को कई सम्मानों से नवाजा गया था। स्व॰ बैरागी का मनासा में भाटखेड़ी पर कवि नगर पर निवास है।

बालकवि की गिनती कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं में होती थी। वे मध्यप्रदेश में अर्जुन सिंह सरकार में खाद्यमंत्री भी रहे। कवि बालकवि बैरागी को मध्य प्रदेश सरकार के संस्कृति सरकार के संस्कृति विभाग द्वारा ''कवि प्रदीप सम्मान'' भी प्रदान किया गया।

उनकी यह रचना आज याद आती है।

चाहे सभी सुमन बिक जाएं, चाहे ये उपवन बिक जाए
चाहे सौ फागुन बिक जाएं
पर मैं गंध नहीं बेचूंगा-अपनी गंध नहीं बेचूंगा

जिस डाली ने गोद खिलाया जिस कोंपल ने दी अरूणाई
लक्ष्मण जैसी चौकी देकर जिन कांटों ने जान बचाई
इनको पहिला हक आता है चाहे मुझको नोचें तोड़े
चाहे जिस मालिन से मेरी पांखुरियों के रिश्ते जोड़े
ओ मुम पर मंडराने वालो मेरा मोल लगाने वाले
जो मेरा संस्कार बन गई वो सौगंध नहीं बेचूंगा
अपनी गंध नहीं बेचूंगा-चाहे सभी सुमन बिक जाएं।

मौसम से क्या लेना मुझको ये तो आएगा-जायेगा
दाता होगा तो दे देगा, खाता होगा तो खाएगा
कोमल भंवरों के सुर सरगम पतझारों का रोना-धोना
मुझ पर क्या अन्तर लाएगा पिचकारी का जादू-टोना
ओ नीलाम लगानेवालो, पल-पल दाम बढ़ानेवालो
मैंने जो कर लिया स्वयं से वो अनुबंध नहीं बेचूंगा
अपनी गंध नहीं बेचूंगा-चाहे सभी सुमन बिक जाएं।

मुझको मेरा अंत पता है पंखुरी-पंखुरी झर जाऊँगा
लेकिन पहिले पवन-परी संग एक-एक के घर जाऊँगा
भूल-चूक की माफी लेगी सबसे मेरी गंध कुमारी
उस दिन ये मंडी समझेगी किसको कहते हैं खुद्दारी
बिकने से बेहतर मर जाऊं अपनी माटी में झर जाऊँ
मन ने तन पर लगा दिया जो वो प्रतिबंध नहीं बेचूंगा
अपनी गंध नहीं बेचूंगा-चाहे सभी सुमन बिक जाए।

हरि सिंह पाल, सचिव,नागरी लिपि परिषद
vaishwikhindisammelan@gmail.com, से 15मई को प्राप्त ईमेल

कोलकाता के मुस्लिम इन्स्टीट्यूट में हिन्दी-उर्दू संगम ने आयोजित कराया मुशायरा और कवि सम्मेलन

कलकत्ता गर्ल्स कॉलेज में सी.जी.एस. सहारा आर्ट एण्ड क्राफ्ट सेमिनार

11 से 12 मई कलकत्ता गर्ल्स कॉलेज में सी.जी. एस. सहारा आर्ट एण्ड क्राफ्ट सेमिनार आयोजित किया गया। इसमें बुनियादी तौर पर उन्होंने बच्चों (स्टूडेण्ट) को प्रशिक्षण देकर उनके द्वारा निर्मित वस्तुएँ उपभोक्ता तक पहुँचाने की चेष्टा की जिससे अपने हाथ से निर्मित वस्तुएँ बेच कर वे अपने भविष्य निर्माण में सहायक हो उन्हें पाव पर खड़े होने का मौका मिले। यह सोच कर कॉलेज ने यह सेमिनार पहली बार आयोजित किया था। इसमें सात बुक स्टॉल लगे थे जिसमें दो हिन्दी, दो इंग्लिश, तीन बांग्ला की किताबों के थे। शान्ति निकेतन की साड़ी-चद्दर का एक स्टॉल था एवं कुछ कपड़ों के भी थे और बच्चों द्वारा खुद से निर्मित कई स्टॉल थे जिनमें विभिन्न तरह के सामान थे। इस सेमिनार को आयोजित करने में प्रमुख भूमिका निभाई वहाँ की प्रिंसिपल सत्या उपाध्याय जी इनके साथ सहयोग किया उनीस नइम, नन्दनी भट्टाचार्य, शम्भुनाथ साह, संचिता दत्ता, प्रसेनजित माथुर इत्यादि।

पत्राचार का पता :

सम्पादक - सदीनामा
48/49A, Swiss Park, Kolkata-700 033
West Bengal, India ☎ : 9231845289
E-mail : jjitanshu@yahoo.com

प्रकाशन प्रभार
•राजेश्वर राय • मीनाक्षी सांगानेरिया
• मारिया शमीम • रमेश कुमार कुम्हार

30 मई 2018 को भारतीय भाषा परिषद कोलकाता में मनाये गये हिन्दी पत्रकारिता दिवस की कुछ झलकियाँ, आयोजक छपते-छपते

पूर्वोत्तर भारत के प्रमुख समुदायों का परिचय उद्‌भव (भाग-1)

Introduction to the main communities of North East India - Paarijat
–परिजात, विशेष संवाददाता, सदीनामा, 9874258426
अनुवादक - डॉ॰ अनीता पंडा, 8787467545
C/o Sri B. K. Panda, Urban Affair Residential Complex
97, Khar Malki, Shillong - 793001, Meghalaya
aneeta.panda@gmail.com
मार्गदर्शन - अजयेन्द्र नाथ त्रिवेदी, 9874459767

ऑस्ट्रोएशियाई लोगों के एक समूह ने अपनी मातृसत्तात्मक संस्कृति कुलदेवी के साथ भारत के कुछ भागों में प्रवेश किया। कुछ पूर्वोत्तर भारत में बस गए, जो आज मेघालय के खासी, पनार या जैंतियाँ जनजातियाँ हैं। शायद वे पहले मंगोल हैं, जो भारत में बसे हैं। खासी समुदाय के लोग जो भाषा बोलते हैं, उस पर चीनी और तिब्बती-बर्मी भाषा का प्रभाव दिखाई देता है परन्तु मूलतः यह 'मोन-खमेर' भाषा के समान है।

तिब्बत से आए बहुत से प्रवासी और आगे जाने बजाय भारत या बर्मा में बस गए। जो लोग पहले बसे, वे बथोऊ की पूजा करते थे। लोग इन्हें कचारी या बोडो कहते हैं। उन्हें 'बोडो फिसा' अर्थात् बोडो की संतान कहते थे। ऐसी मान्यता है कि बोडो कहते हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि बोडो शब्द की उत्पत्ति तिब्बत से हुई है। ऐसी मान्यता है कि बोडो शब्द की उत्पत्ति बोड हुई, जिसका अर्थ है मातृभूमि। भारत के राजकुमार सिद्धार्थ, जिन्होंने आध्यात्म की प्राप्ति के लिए अपनी धन-सम्पत्ति त्याग कर और बौद्ध-धर्म का प्रचार किया। उनका अनुसरण करने वाले बौद्ध-भिक्षुक कहलाए।

वे तिब्बत में आकर बस गए। यहाँ से वे दक्षिण की ओर फैल गए और बोडो से मिले। बोडो इन्हें बत्सी कहते थे। जिसका अर्थ है - बत्सी-बोड या बत्सी का घर। बत्सी-बोड नाम से तासी-बोड और तब तीबोड हुआ। जिसे अंग्रेजी में तिब्बत कहते हैं। धीरे-धीरे बोडो कई भागों में बँट गए। इतिहास के अनुसार वे पूर्वोत्तर के अधिकतर भागों में बस गए। बोडो के विभिन्न समूह आज बोडो, चेतिया, मेछ, कोच, बिमासा, गारो और राभा है। ऐसा कहा जाता है कि खासी और बोडो के सह-समुदाय के लोग गारो में दोस्ती थी और वे नीलांचल पर्वत पर एक साथ रहते थे। यद्यपि बोडो समुदाय ने पितृसतात्मक व्यवस्था को अपनाया जबकि गारो ने खासी समुदाय की भांति मातृसत्तात्मक व्यवस्था को अपनाया और अंत में वे मेघालय के पश्चिम भागों में बस गए। इन ये दोनों समुदाय ने कई परम्पराओं एवं रीति-रिवाजों को अपनाया।

मैतेई दूसरे तिब्बती-वर्मा प्रजाति से हैं, जो अपने वंशज की पूजा करते हैं। उनका विश्वास है कि मनुष्य ईश्वर का वंशज है। एक समय ऐसा था कि मानव और ईश्वर एक साथ एक जगह रहते थे। संभवतः वे म्येनमार से पूर्व की ओर आए पहाड़ियों से घिरी इम्फाल नदी की घाटी में बस गए। उस समय घाटी पानी से भरी थी लेकिन धीरे-धीरे पानी घटता गया और वे रहने के लिए नीचे आए। उन्होंने अपना एक सशक्त राज्य और संस्कृति की स्थापना की। अन्य जनजातियों उनके चारों ओर पहाड़ियों पर बस गई। इस दौरान मैतेइ शासकों ने पहाड़ियों बसे जनजातियों को जीत लिया। समय-समय पर भिन्न-भिन्न मैतेइ शासक थे जैसे - तिलिकोकतनं, अहंबा, काँलेपाक, मैत्रेबाक आदि। इनमें से एक राजा किसी तरह हिन्दू ब्राह्मण में परिवर्तित हो गया और उन्होंने आर्यों की परम्परा को अपनाने का निश्चय किया साथ ही घोषणा की कि शासन पहले ही जैसा चलेगा। जैसा कि महाभारत में वर्णित है, वे अपने को अर्जुन और मणिपुर की राजकुमारी 'चित्रांगदा' के वंशज बताते हैं। चित्रांगदा और अर्जुन का पुत्र 'बब्रुवाहन' कलिंग का राजा था । कलिंग दक्षिण उड़ीसा में स्थित है। यह भारत की सबसे समृद्ध संस्कृति है। इनका नृत्य 'लाई हराओबा' के नाम से जाना जाता है। जिसका अर्थ है- देवताओं का नृत्य यह मणिपुर का शास्त्रीय नृत्य हैं।

मैतेई के चारों ओर पहाड़ियों पर रहने वाली

जनजातियाँ इनसे अलग थीं। इनमें से कुछ उत्तर अर्थात् आज के नागालैंड और म्येनमार से आईं। ऐसा विश्वास है कि ये जनजातियाँ दक्षिण एशिया के तटीय प्रदेशों से यहाँ आई। इनके रीतिरिवाज और परम्पराओं में समानता परन्तु बोलियों में भिन्नता पाई जाती हैं। इनकी भाषा और बोलियों की संख्या लगभग नब्बे है। जनजातियों एवं उपजनजातियों की संख्या पचास है। वर्तमान समय में इनमें से आओ, अंगामी, चांग, चाक्केसंग, कोन्याक, लोथा, संगतम और यून्चुनगर नागालैंड में जबकि दूसरी जनजाति जैसे - माओ, मराम, तान्खुल, इम्फाल घाटी की पहाड़ियों पर रहते हैं। इनमें से कुछ अरूणाचल प्रदेश और असम में रहते हैं। नागा शब्द का अर्थ है - लोगों का समूह या सगठन। उन्हें कभी भी एक समूह के रूप में नहीं देखा गया। ब्रिटिश व्यापारियों ने इन्हें आम पहचान दी और व्यापार के लिए एक ऐसी भाषा का विकास किया, जो असमिया पर आधारित है। इसे नागामीज के नाम से जाना जाता है। वास्तव में सम्प्रेषण के लिए एक ऐसी भाषा उभर कर आई, जो कई अलग-अलग भाषाओं का मिला-जुला रूप है। आज यहाँ के बड़े-बड़े शहरों जैसे - कोहिमा, दीमापुर आदि में सम्पर्क की भाषा नागामीज है। शहरों में नागामीज का प्रयोग होता है जबकि गाँवों में लोग अपनी जनजातीय भाषा और बोलियों का प्रयोग करते हैं।

बोडो का एक सह-समुदाय त्रिपुरी है या त्रिपरा है। वे त्रिपुरा के मूल निवासी हैं। वे राजा देबवर्मन के विस्तृत राज्य में बस गए। यह राज्य आज का असम कचार घाटी, त्रिपुरा मिजोरम तथा सिलट था। उनकी राजधानी खोरोंगमा या खोलोंगमा थी, जो आजकल बांग्लादेश के सिलट के चिटगाँव में हैं। इनकी भाषा 'काकबरोक' है। अंग्रेजी सरकार के काम के लिए बंगाल से भारी संख्या में लोग आकर बस गए और उन्होंने त्रिपुरी की जगह ले ली। आज त्रिपुरा में बंगालियों की जनसंख्या अधिक है और बंगाली यहाँ मुख्य भाषा है। यद्यपि त्रिपुरी अब भी कोकबरोक बोलते हैं। त्रिपुरी की कई जनजातियाँ हैं जैसे - रियांग, जमातिया और नोअतिया। कुछ गारों और उसके सह-समुदाय हजोंग तथा मुन्डा जनजाति के ग त्रिपुरा में रहते हैं। ड़ा लोगों की भाषा को ानीय भाषा में 'मुरा' हते हैं।

अरूणाचल प्रदेश उत्तर और पश्चिम भाग निवास करने वाले ड़ी संख्या में तिब्बती- र्ी लोग बौद्ध धर्म का लन कर रहे हैं। ये भाग ान से सटे हैं। 'मोंपस' ार 'शेर्दुक्पैसं' उनमें से । म्येनमार की सीमा लगे अरूणाचल के ि भाग में खात्मिस और ध्योस हैं,जो बौद्ध धर्म क हीनयान के थेरवेद का पालन करते हैं। पूर्वी अरूणाचल में रहने वाले लोग अधिकांशत: म्येनमार से यहाँ आए। उनके ऊपर म्येनमार के थाई संस्कृति का प्रभाव देखा जा सकता है। आदी, अकास, आपातानी, बंगनिस, निशी मिसमी, मिजी, थोंग्सा, जो अरूणाचल प्रदेश के केन्द्र और पूर्वी भाग में रहते हैं। वे अपने मूल धर्म को मानते हैं। जिसमें प्रमुख है सूर्य देवी अर्थात् 'दायी' और उसका पति चाँद यानि 'देवता पोलो' है। इस प्रदेश की दक्षिणी सीमा, जो कि नागालैण्ड की जनजाति की तरह है। उनमें समानता पाई जाती है। इनमें नोक्टेस और वान्चोस भी शामिल हैं।

❑ इतिहास ❑

साझा पढ़ाया जाये, आजादी के पहले का इतिहास

मुझे जितेन्द्र सर ने एक किताब दी जिसका नाम ''मेरा देश तुम्हारा देश'' लेखक कृष्ण कुमार हैं। प्रकाशन राजकमल प्रा॰ लि॰, 2 बी॰ नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002। इस पुस्तक में भारत और पाकिस्तान के बच्चों को स्कूलों में जो पढ़ाया जा रहा है तथा उसका इनके मन में एक दूसरे के देश के बारे में क्या विचार विकसित हो रहे हैं तथा स्कूलों में पढ़ायी जाने वाली इतिहास की किताबों ने उनके दिल और दिमाग पर कहाँ तक असर किया है।

मैंने इस किताब को पढ़ा और इसमें जो भी महत्वपूर्ण बाते हैं उन सभी को लेकर मैंने ये रिपोर्ट लिखी है तथा चाहती हूँ कि आपसे साझा करूँ।

मारिया शमीम,
maria.samim@yahoo.com

भारत और पाकिस्तान साक्षरता की दृष्टि से दुनियां के सबसे पिछड़े समाजों में से हैं। दोनों ने अपने-अपने बच्चों की शिक्षा की अवहेलना पूरे निश्चय के साथ की है। शिक्षा में सुधार दोनों की प्राथमिकता नहीं है, और दोनों के पास शैक्षिक सुधार के लिए समय-समय पर की गई ऐसी सिफारिशों का जख़ीरा है जिन पर कभी अमल नहीं किया गया। आज शिक्षा पर लिखते समय कोई भी इस तथ्य की उपेक्षा नहीं कर सकता। इसके अलावा इतिहास का अध्यापन - जो इस अध्ययन के केन्द्र में है - दोनों देशों में सिर्फ राजनैतिक चिन्ता जगाता है। यह उन बच्चों के लिए की गई चिन्ता का विषय नहीं बना जो शिक्षा को ग्रहण करने वाले छोर पर होते हैं।

पाकिस्तान के प्रति नकारात्मक भावना बहुत आम बात है, और मुझे इसमें सन्देह नहीं है कि भारत के बारे में नकारात्मक भावनाएँ पाकिस्तान में भी आम हैं। उपनिवेश रह चुके नवतर राष्ट्र राज्यों में राष्ट्र निर्माण का उद्देश्य बच्चों की शिक्षा पर इस कदर हावी रहता है कि अन्य उद्देश्यों, खासकर बौद्धिक विकास से सम्बन्धित उद्देश्यों के लिए मौके बहुत कम रह जाते हैं। स्कूलों की साधनहीनता और परीक्षा को दिया जाने वाला अतिशय महत्व भी बौद्धिक विकास से जुड़े उद्देश्यों की अवहेलना में योगदान देते हैं। भारत में स्कूली इतिहास धर्मनिरपेक्ष और साम्प्रदायिक नज़रियों के बीच झूलता रहा है।

भारत का मामला है इसलिए भारत के लिए चीजें थोड़ी भिन्न हैं। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (NCERT) ने अपनी इतिहास की पुस्तकें 1970 के दशक में प्रकाशित की थीं और ये पुस्तकें केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के स्कूलों में अब तक इस्तेमाल होती रहीं हैं।

इस अध्ययन का एक प्रमुख उद्देश्य राष्ट्रवाद की उन प्रतिद्वन्द्वी विचारधाराओं को जाँचना है जिसमें बच्चों को समाजीकृत करने की कोशिश स्कूली अवस्था करती है। साधारणत: शिक्षा की ये प्रणालियाँ बच्चों की बौद्धिक अथवा चिन्तनपरक क्षमताएँ विकसित करने के बजाय उनमें वफादार नागरिक के लक्षणों को परिष्कृत करने में लगी रहती हैं। अतीत के एक लम्बे रिकार्ड की तरह स्कूल में किया गया इतिहास का चित्रण बच्चों के सामने निश्चय ही उसी तरह की संज्ञानात्मक चुनौती रखता है, जैसी पाठ्यचर्चा के अन्य क्षेत्रों में उनके समक्ष आती है, लेकिन, ये चुनौतियाँ शायद इतिहास के सन्दर्भ में ज्यादा गूढ़ हो जाती हैं। स्कूल के एक विषय के रूप में इतिहास दोहरे चेहरेवाली मूक घटनाओं के रिकार्ड के रूप में उभरकर आता है।

विद्यार्थी अक्सर अचरजभरा यह विलक्षण सवाल पूछते हैं कि यदि पाकिस्तान एक मुस्लिम राष्ट्र है तो फिर भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र कैसे हो सकता है? इस सवाल के पीछे गणितीय तर्क यह है कि अगर मुसलमानों ने 1947 में मुस्लिम राष्ट्र के नाम पर विभाजन किया तो बचे हुए भाग को हिन्दू राष्ट्र होना चाहिए। यह साफ-सुथरा निष्कर्ष भारत में रह रहे मुसलमानों की मौजूदगी को भी इस बात के लिए पर्याप्त कारण नहीं मानता कि निष्कर्ष पर पुनर्विचार किया जा सके। कुछ विश्वविद्यालय के चंद विद्यार्थी ही यह स्वीकार कर पाते हैं कि भारत का बहुलतावादी समाज अपने ढाँचे में धार्मिक सांस्कृतिक बहुलता के पक्ष में है। अधिकतर मानते हैं कि अगर भारत एक बहुलतावादी राष्ट्र है तो फिर पाकिस्तान की जरूरत ही क्या थी। यह कट्टरपंथी स्थिति

उन्हें पूछने पर मजबूर करती है कि धर्मनिरपेक्षता राजनीति का खेल जीतने के लिए एक आलंकारिक हथियार है और कहते हैं कि इस खेल का नाम 'वोट बैंक' है।

हमने जब स्कूलों बच्चों के लिए निबंधों को देखा तो पाया सरकारी स्कूल के बच्चों ने अपने निबन्धों में अपनी राय व्यक्त की है। जो बच्चे हिन्दू राष्ट्र के पक्ष में थे उनमें से कुछ का मानना है कि 1947 से पहले तक भारत पर पाकिस्तान ने शासन किया। इस धारणा के पीछे इतिहास की विषय-वस्तु और पाठ्य पुस्तकें जिम्मेदार हैं जिनमें यह नहीं बताया गया है कि पाकिस्तान ने अंग्रेजों के मदद से भारत पर शासन नहीं किया था। परोक्षरूप से इन बच्चों ने पाकिस्तान को मुस्लिम के पर्याय के रूप में प्रयोग किया है। यह प्रचलन कुछ बच्चों तक सीमित नहीं है। इस तरह 'पाकिस्तान' मुसलमानों, उनके इतिहास और उनकी प्रवृत्तियों का पर्याय बन गया है। हिन्दू भारत का विचार मुसलमानों की उस रूढ़ छवि से अनिवार्यत: जुड़ गया है जो घृणा और अविश्वास की बुनियाद पर टिकी है।

पाकिस्तानी बच्चों के निबन्ध इस सवाल के इर्द-गिर्द घूमते हैं कि विभाजन उचित था या नहीं। कुछ का मानना है कि मुसलमानों और हिन्दुओं के बीच धार्मिक अन्तर है और कुछ ने कहा कि अंग्रेजों के शासन में हिन्दुओं के मुकाबले मुसलमानों को समान अवसर नहीं मिले। सिर्फ उर्दू माध्यम के बच्चों ने ही विशेष रूप से शिक्षा और रोजगार के अवसर का मुद्दा उठाया है। संयोगवश पाकिस्तान के मौजूदा आर्थिक संकट और बुरी तरह बिखरे सामाजिक ढाँचे की वजह से उर्दू माध्यम के बच्चे रोजगार को लेकर चिंतित हैं। दूसरे छोर पर हम यह दृष्टिकोण पाते हैं कि हिन्दुओं और मुसलमानों की संस्कृति एक समान थी और आज भी करीब करीब एक जैसी ही है। जिन बच्चों ने यह तर्क दिये हैं उनमें विभाजन के कारण को लेकर भ्रम भी दिखता है लेकिन विभाजन के एक ऐतिहासिक तथ्य के रूप में स्वीकार करने में उन्हें कोई दिक्कत नहीं आती। कुछ बच्चे पूछते हैं कि यदि अतीत में हिन्दू और मुसलमान एक साथ शांतिपूर्ण तरीके से रह सकते थे तो फिर अलग राष्ट्र के रूप में वे ऐसा क्यों नहीं कर सकते ?

भारतीय बच्चों से इसकी तुलना की जाए जो केवल सरकारी स्कूलों के बच्चों के निबन्धों के आखिर में दी गई उस उक्ति को ही रेखांकित किया जा सकता है 'मेरा भारत महान'। हालांकि कोई भी इस आधार पर निष्कर्ष नहीं निकाल सकता है।

इस तरह के आरोपों से कोसों दूर, बच्चों ने क्रिकेट मैच को युद्ध का मैदान बनाने की निंदा की है और इस बात की भी निन्दा की है कि खेल सिर्फ जीतने के लिए ही खेला जा रहा है। एक निबन्ध में दिया गया है कि भारतीय हॉकी की दुर्दशा इस बात का संकेत है कि विभाजन फायदे का नहीं बल्कि घाटे का सौदा रहा। एक बच्चे ने कहा कि यदि भारत और पाकिस्तान एक साथ रहे होते तो उनकी एक साथ बनी हॉकी टीम अजेय होती।

भारतीय और पाकिस्तानी शिक्षा प्रणाली में सिखाए जाने वाले मतों पर आधारित एक तरह का सामूहिक मत क्यों नहीं ? इसका जवाब इस विषय की प्रवृत्ति में छिपा है। भारत-पाकिस्तान विभाजन पर अपने मत को उजागर करने के मौके ने विद्यार्थियों को रोमांचित कर दिया, शायद इसलिए कि इस घटना का उन पर काफी गहरा प्रभाव पड़ा है। इसमें कोई आश्चर्य प्रकट करने की बात नहीं है कि स्कूली कार्यों के तहत शायद ही उन्हें इस प्रकार अपने मत उजागर करने का मौका मिलता होगा। जहाँ तक पाठ्यक्रम में विषय का सवाल है तो भारतीय स्कूलों में पाकिस्तान तो बिल्कुल वर्जित है और पाकिस्तान में भी भारत विषय पर पढ़ाई करना वर्जित है।

❑ इन्टरव्यू ❑

रेत में नौका चाल जावे

–वैशाली डालमिया

वैशाली डालमिया, एक आकर्षक महिला व्यक्तित्व की पहचान करवाती, बिजनेसवुमैन से विधायक तक का सफर तय करती हुईं । अप्रैल 22, 1969 को जगमोहन डालमिया के घर जन्मीं। शुरू से ही समाज की सेवा कार्य में लग गयी थी जबकि घर से बाहर निकलने नहीं दिया जाता था। लेकिन नेक कार्य के लिए कभी अड़चन नहीं हुई। माँ चन्द्रलेखा एवं नानी आभा घोष के देख-रेख में पली-बड़ी। बड़ी होकर पिता के कंस्ट्रक्शन के व्यापार में कार्य करने लगी। आज वे बाली विधानसभा की विधायक हैं। हमारी संवाददाता मिनाक्षी सांगानेरिया ने उनका साक्षात्कार लिया।

सदीनामा :- विधायक के तौर पर आप अपने क्षेत्र में क्या-क्या विकास करना चाहती हैं और समस्याओं का निदान कैसे करना चाहती हैं ?

वैशाली डालमिया : मैं एक सोशल वर्कर रह चुकी हूँ। इसलिए जनता द्वारा चुने जाने पर मैंने पहले वहां गंदगी हटवाने का प्रयास किया। हास्पिटल नव निर्माण का कार्य आरम्भ किया। वहाँ पर ग्वर्नमेन्ट के तीन हास्पीटल हैं जो पहले जर्जर अवस्था में थे। लेकिन विधायक तौर पर जनता ने मुझे चुना तो मैंने वहाँ पहले हॉस्पीटल की जो बिल्डिंग जर्जर अवस्था में पहुँच चुकी थी उनको सुधार कराया और पानी की निकासी का कार्य शुरु किया। उस एरिया में जल जमाव की स्थिति बहुत खराब थी उसमें सुधार आया। सत्य बाला हॉस्पिटल, तुलसी हॉस्पिटल एवं बेलुड़ स्टेट जनरल हॉस्पिटल हैं और वहाँ पर नेचरोपैथी, योगा एवं एक मेडिकल कॉलेज का निर्माण किया जा रहा है। स्कूलों की हालात बड़ी खराब थी उनकी स्थिति में सुधार लाया जा रहा है। वहाँ हमने तीन सरकारी इंग्लिश मीडियम स्कूल भी आरम्भ किये हैं। यह सब मुख्य मंत्री के फंड से किया जा रहा है। वहाँ के स्थानीय लोगों द्वारा भी सहयोग किया जा रहा है। जिनके घर नहीं है उनके लिए बस्ती उन्नयन सेल द्वारा 'आमार बाड़ी' का निर्माण भी सरकार द्वारा किया जा रहा है।

सदीनामा :- आप राजनैतिक परिवार से न होकर जब आज राजनीति से जुड़ी हैं तो विधायक के तौर पर कैसा महसूस कर रहीं हैं?

वैशाली डालमिया : जी, नहीं, मैं राजनैतिक परिवार से हूँ। मेरे पिता जगमोहन डालमिया तो क्रिकेट एसोशियेशन के अध्यक्ष रह चुके हैं। बिना राजनैतिक कार्य करे बिना कोई मुकाम नहीं मिलता, मैडम! मैं एक सोशल वर्कर तो 13 साल की थी तब से हूँ और विधायक बनने से मुझे यह सुविधा हुई कि जो काम मैं अपने लोगों के लिए करना चाहती थी। वह अब मैं आराम से कर सकूंगी। इसलिए मैं विधायक बन कर अपने आपकी खुश महसूस करती हूँ। इस क्षेत्र में और आगे बढ़ना चाहती हूँ।

सदीनामा :- जो बच्चे प्रसिद्ध पिता के संतान होते हैं उन्हें क्या महसूस होता है अपने पिता की प्रसिद्धि पर कैसे संतुलन करते हैं ?

वैशाली डालमिया : गर्व महसूस करते हैं क्योंकि कहीं भी जाते थे तो हमें जगमोहन डालमिया की पुत्री के नाम से लोग जानते हैं तो गर्व होना स्वाभाविक है। आज पापा की प्रसिद्धि का हमें लाभ भी मिला है।

सदीनामा : आज के युग में महिलाओं की उन्नति के लिए आप क्या सोचती है?

वैशाली डालमिया : मेरी सोच है कि महिलाएँ को आज के समाज में उचित सम्मान मिले और बराबरी का दर्जा हासिल हो। वो भी पुरुष के समकक्ष अपने को महसूस करें। मैं तो पहले से ही बिजनेस करती आयी। जब मैं विधायक बनी तब मैंने निम्न वर्ग महिलाओं के उत्थान का प्रयत्न आरम्भ जोरों से किया उनके पास शिक्षा, स्वालम्बन, उनकी बेटियों की शादियों के खर्च वहन करना उन्हें फ्री टेलरिंग ट्रेनिंग देना जिससे वे स्वावलम्बन की ओर अग्रसर हो। मैं बाली के 63 नं॰ वार्ड में Packaging के लिए महिलाओं के ग्रुप को तैयार कर उनको रोजगार की व्यवस्था की। सरकार ने महिला स्वालम्बन स्वत: रोजगार योजना के तहत यह कार्य किया जा रहा है।

सदीनामा : आपकी रूचियाँ क्या - क्या हैं? इस व्यस्त समय में आप अपनी रूचियाँ के लिए कैसे समय निकाल पाती है।

वैशाली डालमिया : ''जहाँ चाह होती है वहाँ राह अपने आप आसान हो जाती है'' यह कथन था उनका। मेरे घर में एक चिडियाघर है। मुझे कुत्ते पालने का भी शौक है। अपने घर में

तरह-तरह के जानवर रखती हूँ। मेरी रूचि में सोशल वर्क भी जो पहले केवल वहीं करती थी अब विधायक बनने के बाद वह कार्य और आसान हो गया। मैं ऐनिमल वेलफेयर से भी जुड़ी हुई थी तो जानवरों के प्रति मेरे मन कुछ करने की चाहत रहती थी।

सदीनामा : आपकी शिक्षा-दीक्षा कहाँ से हुई।

वैशाली डालमिया : मेरी शिक्षा बंगाल में हुई। स्कूल प्रैट मेमोरियल थी एवं कॉलेज शिक्षायतन। एक्सटीरियर -इन्टीरियर आर्किटेक्चर डिजाइनिंग का भी कोर्स किया।

सदीनामा : आपका बिजनेस क्या है ?

वैशाली डालमिया : डायरेक्टर, एम. एल. डालमिया कम्पनी जो मेरे दादा जी के द्वारा बनाई हुई है। इस कम्पनी का काम है कन्ट्रक्सन सिटी डेवलपर इत्यादि। हमारी बनाई हुई कई ऐसी जगह हैं जहाँ पर्यटक भारी मात्रा में आते हैं :- बिडला प्लेनेटेरियम, बिड़ला मन्दिर, मायापुर इस्कान मन्दिर, पुराना एयरपोर्ट रनवे, एम.पी. बिड़ला स्कूल, सिंघानिया स्कूल, मॉडर्न हाई स्कूल, कोठारी हास्पिटल, कोलकाता हॉस्पिटल, मालद्वीप एयरपोर्ट, टी.वी.टावर गुजरात, जलंधर, भुज में जो टावर बनाया वो नारियल की पेड़ की तरह बनाया गया है। जिससे कितनी आंधी आये या तूफान उस टावर को क्षति न पहुँचे। इस तरह और भी हैं लेकिन इतने के नाम ही आपको बता रही हूँ।

सदीनामा : आप मारवाड़ी समाज से हो तो आप अपने समाज को क्या संदेश देना चाहती हो।

वैशाली डालमिया : मेरे समाज की लड़कियाँ बहुत फारवर्ड हैं। वे बिजनेस करके या उच्च पदों पर रह कर कार्य कर रही हैं। ज्यादातर लड़के लड़कियाँ बिजनेस माइंडेड होते हैं। हमारे समाज की एक खासियत है कि यहाँ घरेलू महिलाएँ अपने घर को सुरूचिपूर्ण सम्भाल कर भी कुछ कार्य करती रहती हैं। जैसे :राखी बनना, टेलरिंग का कार्य करना या घर से ही कुछ स्पेशल तरीके के भोजन बना कर बाजार में बेचती हैं। हमारा समाज संघर्ष और चुनौतियों को स्वीकार करते हुए कार्य करता है। इस समाज के बच्चों में एक खासियत है कि वे अपने पाँवों के बल पर कार्य करते हैं। मारवाड़ी की एक कहावत है 'रेत में नौका चाल जावे' इसलिए मैं अपने समाज को यह संदेश देना चाहूँगी कि आप कुरीतियों को दूर करें गतिवान, शक्तिवान और वैभवशाली बनें।

कोलकाता की सामाजिक संस्थाएँ - राम भरोसे

(कोलकाता से प्रकाशित अखबार 'छपते-छपते' के सम्पादक - विश्वम्भर नेवर का दर्द-सम्पादक)

कोलकाता के मुकुट में समाज सेवा का हीरा जड़ा हुआ था। कई कमजोरियों के बावजूद मानव सेवा एवं समाजोपयोगी कार्यकलापों के लिए कलकत्ता का बड़ा नाम था। एक समय था जब देश में कहीं बाढ़ आ जाती तो कलकत्ता के समाजसेवी सड़क पर उतर जाते और घर घर जाकर कपड़ा और पैसा इकट्ठा करते थे। गत 15-20 वर्षों में बाढ़, सुनामी आयी पर हमारे शहर में संवेदना कहीं नजर नहीं आयी। पहले बाढ़ राहत कार्य करने सरकारी लोग बहुत बाद में पहुँचते थे। इस शहर की सामाजिक संस्थाओं के लोग पहले पहुँच कर तंबू गाड़ देते थे। **मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी** इस मामले में सबसे आगे रहती थी पर अब उसने अस्पताल चलाने को छोड़ बाकी सभी गतिविधियों से वर्षों पहले ही संन्यास ले लिया है। **नागरिक स्वास्थ्य संघ** बहुआयामी संस्था थी - प्राकृतिक विपदाओं से लेकर आँख ऑपरेशन और बहुत सारे जन कल्याण कार्यों के लिए **नागरिक स्वास्थ्य संघ** का नाम जुबान पर रहता था। अब इस संस्था की गतिविधियाँ पहले की अपेक्षा सिमट गई हैं। वही स्थिति नामीगिरामी **श्री काशी विश्वनाथ सेवा समिति** की है। एक समय की शीर्ष संस्था में अब श्रावण मेला में कांवडियों की सेवा एवम् अपनी जल वाहिनी को छोड़ दूसरे सेवा कलापों पर विराम लगा रखा है। समिति के कुछ पुराने कार्यकर्ताओं ने अघोषित दूरी बना ली है। समिति का काम ठहर सा गया है। एक और संस्था **कुम्हार टोली सेवा समिति** जो कुछ वर्ष पहले तक बहुत सक्रिय थी अब मात्र एक साईनबोर्ड बनकर रह गई है। समिति के अध्यक्ष श्री श्यामलाल जालान के हाल ही में निधन के बाद इस संस्था में संकट पैदा हो गया है। संस्था के सचिव सुभाष मुरारका लायन्स क्लब आदि में अधिक सक्रिय हैं पर समिति उनके नियंत्रण के बाहर हो गई है। संस्था में एक दो स्टाफ सर्प कुण्डली मार कर बैठ गए हैं। कुम्हार टोली सेवा समिति ट्रस्ट ने अपना नाम **संजीवनी ट्रस्ट** रखकर काम शुरु किया था। पर इसके प्राण पुरुष श्री गणेश प्रसाद सराफ के एक वर्ष पूर्व निधन होने के कारण उस ऊर्जा का आदमी वहाँ नहीं है, जो बड़ी गतिविधियाँ शुरु कर सके। उनके पुत्र मानव सराफ सचेष्ट हैं, संस्था के मामले में उनकी योजना हैं, कितना कर पायें भविष्य ही बताएगा।

अस्पतालों की बात करें तो **मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी** के मुख्य भवन के बगल की जगह 30-40 साल के कोर्ट-कचहरी के बाद अब कानूनी शिकंजे से बाहर है पर वहाँ अभी तक सोसायटी ने कुछ प्लान नहीं किया है। एक समय था जब सोसाइटी का राहत सेवा कार्य के लिए देश भर में नाम था, रांची में चेंजर लोगों के लिए विशाल आवास व्यवस्था थी जो 40 साल पहले ही इनके हाथ से निकल गई। दार्जिलिंग में भी जगह थी। टालीगंज में एक डिस्पेंसरी, सोसाइटी भवन में दवाई की दुकान, कलाकार स्ट्रीट में पूड़ी मिठाई की दुकान और सोसाइटी के मुख्य भवन के सामने शिशु अस्पताल बनाने की योजना थी। पर यह सब अब इतिहास की बात हो चुकी है। बेशक सोसाइटी एक अस्पताल रह गया है जो रोगियों से भरा रहता है। अमहर्स्ट स्ट्रीट स्थित **श्री विशुद्धानन्द मारवाड़ी अस्पताल** के पास विशाल जगह है उसको देखते हुए चिकित्सा सेवायें बढ़ायी जानी चाहिये थी।

जहाँ तक शिक्षण संस्थाओं का सवाल है **माहेश्वरी विद्यालय एवं बालिका विद्यालय** में छात्र-छात्राओं की

संख्या कम हो गई है। पुस्तकालय वाचनालय सीए के छात्रों को परीक्षा की तैयारी के लिए बरता जा रहा है, इस प्रकार यह ऐतिहासिक संस्था भी गिर पड़ कर चलाई जा रही है। चुनाव होने वाले हैं, चुनाव की गर्मी है पर माहेश्वरी सभा और उसके अन्तर्गत संस्थाओं की गतिविधियाँ ठण्डे बस्ते में पड़ी है। **श्री विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय** के ट्रस्ट बोर्ड एवं संचालन समिति में तालमेल नहीं है, परिणामस्वरूप यह पुराना विद्यालय जैसे-तैसे चल रहा है। **मारवाड़ी बालिका विद्यालय** लड़कियों की लगभग एक सौ साल पुरानी स्कूल है। धनाभाव और स्थानाभाव के कारण इसका उचित विस्तार नहीं हो पा रहा हैं । टैगोर कैंसल का **बालकृष्ण बिदुलनाथ विद्यालय** शायद अन्तिम सांस ले रहा है।

हिन्दी भाषियों की सबसे बड़ी दुर्गापूजा मोहम्मद अली पार्क में होती है। **यूथ एसोसियेशन** इसका आयोजन करती है। दुर्गापूजा करना ही इस एसोसियेशन की एकमात्र गतिविधि है इस क्षेत्र के कई कार्यकर्ताओं की यह कर्मस्थली है। वहां भी झगड़ा शुरू हो गया है, दो गुटों में तनाव है। यूथ एसोसियेशन के अध्यक्ष पूर्व विधायक दिनेश बजाज को हटा दिया गया है एवं उनके स्थान पर स्व. देवी नन्दन पोद्दार के सुपुत्र मनोज पोद्दार अध्यक्ष चुन लिए गये हैं। इस नये चुनाव को लेकर दो गुट आमने-सामने हैं। दुर्गापूजा के पूर्व खूंटी पूजा तो गई पर कार्यकर्ताओं की खेमेबाजी से सारा वातावरण लड़ाई की तैयारी जैसा बन गया है। दोनों ही गुट में अच्छे कार्यकर्त्ता हैं पर खाई पाटने की बजाय और चौड़ी होती जा रही है। मामला कोर्ट कचहरी तक पहुँचने की आशंका है और अगर ऐसा हुआ तो हर साल होने वाली दर्शनीय दुर्गापूजा पर ग्रहण लग सकता है। कई हिन्दी समाचार पत्रों में दोनों गुटों ने अपने-अपने मतलब की खबर छपवाई है पर समाज का कोई वरिष्ठ इनमें सुलह कराने के लिए आगे नहीं बढ़ रहां है।

मेरा उद्देश्य किसी संस्था के विरुद्ध या किसी भी व्यक्ति के विरुद्ध लिखने का कतई नहीं है। दुर्भाग्य है कि समाज में ऐसे लोग अब नहीं रहे जो कार्यकर्ताओं के आपसी मनमुटाव को खत्म करवा सके। हां कुछ लोगों का प्रयास है कि वैमन्स्थ बढ़े ताकि व्यक्ति विशेष का इसमें लाभ हो सके। आज कार्यकर्ताओं के लिए सबसे बड़ी विडम्बना है कि उन्हें कार्य भी करना पड़ता है और चन्दा भी जुगाड़ना होता है। दानदाता कम होते जा रहे हैं। संस्थाएँ या बन्द हो गई हैं या बन्द होने के कगार पर हैं। बड़ा बाजार में नये आयाम जुड़ने के नाम पर दो पुलिस थाने खुले हैं गिरीश पार्क और पोस्ता। दो बड़ी मूर्तियां लगी हैं – महाराज अग्रसेन और महाराणा प्रताप की। दोनों की अपनी-अपनी अहमियत है पर सामाजिक सेवाओं पर ग्रहण लगता जा रहा है। समाज सेवा, समाज सुधार, समाज कल्याण धीरे-धीरे अतीत की शोभा यात्रा का हिस्सा बन गया है। लोगों के पास धन की कमी नहीं है पर अब विवाह-शादियों, आडम्बर, बर्थ डे या मैरेज एनीवर्सरी या फिर कुछ धार्मिक आयोजनों पर धन वर्षा हो रही है। प्राय: सभी धर्मशालायें बन्द हो चुकी हैं और बड़े-बड़े पांचसितारा बैंक्वेट हॉल खुल गये हैं जो धड़ल्ले से चल रहे हैं।

समय रहते इस स्थिति पर विचार नहीं किया गया तो हमारी आने वाली पीढ़ी हमें कभी माफ नहीं करेगी।

बच्चों की दिल की बीमारी का नि:शुल्क इलाज

श्री पूर्विक मेहता ने 31 मई 2018 को हमें फोन पर तस्दीक की कि 18 वर्ष के कम के बच्चों के हृदय सम्बंधी किसी भी बीमारी का नि:शुल्क इलाज, एसएल राहेजा हास्पीटल, माहिम (मुम्बई) में कराते हैं। जिनको जरूरत हो फोन करें :- मि॰ पूर्विक मेहता - 9833506056 या जितेन्द्र जितांशु - 9231845289 (कोलकाता)

जिक्र कुछ चिरागों का

(फखरुद्दीन अली अहमद मेमेरियल कमेटी, लखनऊ के आर्थिक सहयोग से)

फहीम बिस्मिल, ऐमनजई जलाल नगर, बीसीएफ , आफिस, शाहजहापुर-242001, उ.प्र., मो. : 7275782569

परिचय :- फहीम बिस्मिल का नाम मेरे लिए नया नहीं है। मैं उनके नाम और काम से अच्छी तरह वाकिफ हूँ फजाए शहरे दिल, नयी रोशनी, सिलसिले अकीदत के और नजरियात उनके चार कविता संग्रह आ चुके हैं। मैंने फहीम बिस्मिल के कलम से निकले तज्केरों, तब्सेरो, खातों को बगैर पढ़ा है और ये देख कर मुत्तहिरों, मोअतजिब हुआ हूँ कि अपनी मुख्तसर अदबी जिन्दगी में डिक्सन का इतना बड़ा खजाना उन्होंने कैसे इकट्ठा कर लिया और ज्यादा हैरत की बात तो ये भी के नज्म पर उन्होंने कमाल हक का कुदरत हासिल है जब एक ही किताब में बहुत ही शख्सीयत के फुक्रोफन का जिक्र मक्सूद हो तो मोसल्लिफ के लिए ये एक बहुत बड़ा चैलेंज होता है। क्योंकि आम तौर पर मोजामीन में नफी फिक्री असलु बयाती यक्सानीयत पर आने से कलमकार की महदूद झल्मेयत की पोल खुल जाती है जिससे इसकी पोजीशन बड़ा मुजहका खैज बिन कर रह जाती है। खुदा का शुक्र है कि फहीम बिस्मिल के साथ ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। उनका जैबे करतास क्या हर मजनून नयी लफ्जीयात नयीफिक्र और नये-नये असालीब की बू कलमूनी के सबब अपने अन्दर ताजगी और सरसारी की कैफियत से लबरेज है और बड़ी खूबी की बात तो ये भी है कि लिखते वक्त उन्होंने ममदू तीन के कद और उनके मुरातिब के इमतियाज को भी मनहूज खातिर रखा है और ये बात तीनों नई किताबों में शामिल गोअरा पर लिखे मुजामीन से खुद बखुद साबित हो जाती हैं–

इन दिनों वो शाहजहाँपुर के मरहूद्दीन का इन्तखाब तरतीब दे रहे हैं। मुझे पूरी उम्मीद है कि उनकी ये किताब दस्तावेज साबित होगी जो शाहजहाँपुर की अदबी तारीख मुस्तब करने वालों के लिए यकीनन मआविन साबित होगी।

–अकबर हैदराबादी

गजल-1

जहाँ में लोग अब ऐसे बहुत हैं,
जो हैं कुछ भी नहीं बनते बहुत हैं
अजब दरिया है दरियाए मुहब्बत,
यहाँ उभरे हैं कम डूबे बहुत हैं।
न जाने क्यों जमाने की नजर में
बुरे हो कर भी हम अच्छे बहुत हैं।
वही अहबाब दुश्मन हैं हमारे
जो हमसे रात दिन मिलते बहुत हैं।
हकीकत तो ये है अहले होश के
मुकद्दर आज कल अच्छे बहुत हैं।
सलामत नियते मन्जिल सलामत
मुसाफिर के लिए रस्ते बहुत हैं।
मुखालिफ मेरे ए जीनत जहाँ में
पराये तो हैं कम अपने बहुत हैं।

गजल-2

मुहब्बत में इलाही कम से कम इतना असर होता
इधर मैं आह करता उस तरफ वह जलता गर होता
समझ लेवे कि तशीरो कशिश दो लफ्ज महमिल है
जो हम से दर्द मन्दों का भी नाले ने असर होता।
तुम्हें रूसवा किया अहले मुहब्बत ने तो क्या गम है
ये ना मुमकिन था हर पहलू में मेरा ही जिगर होता।
दिल ना अहल ये मुमकिन है तुझ को जोश व दहशत हो
मुहब्बत ही अगर होती तो वह क्यों बेखबर होता।
तुझी से इलतजा है देने वाले ताजे शाही के
सर शोरीदह होता और इन का सन्गोदर होता।
बताने नाजनी सजदह करें मेरी निगाहों को
न होता हुस्न कुछ मादूम अगर हुस्ने नजर होता।
किये हैं दोश पर गैसो परेशान तुमने शोखी से
कयामत है अगर मुमताज आशफ्ता नजर होता।

गजल-3

क्या उसे मालूम कोई रात भर तड़पा क्या
सेज पर फूलों की जो आराम से सोया क्या
ऐ मेरे ख्लूतनशीन ये तूने क्या परदा किया
देखने वाला तू हर शए में तुझे देखा क्या
कुछ खबर है तुझको उ ना आशनाए जोके अश्क
झुक गई आँखें किसी की तूने जब शिकवा किया।
अश्के शुरिदह की सर मस्ती का अफसाना न पूछो
क्या बताएँ हमने काबे में किसे सजदा किया।
वह गुरुरे इश्क और ये बरमाला इजहारे शौक
ए दिले बेताब तू ने क्या किया ये क्या किया।
है यहाँ का हर चमन ममतूने खूने अहलेदिल।
हाँ तेरी दुनिया का हमने खूब नजारा किया
फिर कफन बरदोश मुक्तिल की तरफ जाते हैं हम
फिर किसी ने सरफरोशी का हमें इमां किया
उसीको क्या मालूम क्या है हुसूल की जिन्दगी
उम्र भर जो गरदिशे इफलाक को देखा क्या
हाँ वही जावे तमन्ना है वही जाने हयात
जिसने 'अख्तर' दिल की दुनिया को तू बाला किया।

गलज -4

हर खुशी सुरते आलम हुई जाती है
जिन्दगी मौत का पैगाम हुई जाती है।
डूबने ही को है खुरशिदे तमन्ना ऐ दोस्त
कोई दम में मेरे घर शाम हुई जाती है।
यूँ बढ़ी जाती है वारिफ्ता मिजाजी मेरी
कोशिशें जब्त भी नाकाम हुई जाती है।
हुश्न जब वक्फे तमाशा है सरे राह गुजर
आँख क्यों मुरदे अलजाम हुई जाती है।
गम की दुनिया से बहुत दूर हुआ जाता हूँ
खत्म अब गरदिशे आयाम हुई जाती है।
हमसे वारिफ्ता मिजाजों को कहाँ फुरसते अश्क
वह नजर मुफ्त में बदनाम हुई जाती है।
एक जां पर नहीं आता दिले मुजतर को करार
मुझ में पैदा सफ्ते जाम हुई जाती है।
सोज अब शाहभी करना हो तो छुप कर कीजिए
दास्ताने गमे दिल आम हुई जाती है।

हमारी बेबसाइट :

www.sadinama.in

इस अंक को इंटरनेट पर पढ़ें

अब आर्थिक सहयोग देना हुआ और आसान सहयोगकर्ताओं की सूची प्रतिमाह प्रकाशित होती है

SADINAMA

Current Account No. 03771100200213
PUNJAB AND SIND BANK
IFSC CODE : PSIB0000377
Bhawanipore Branch, Kolkata (West Bengal)
SMS to Inform - 09231845289
PLZ SMS WITH YOUR FULL POSTAL ADDRESS & Transaction No. & Date

सुराही का पानी

यदुनाथ राम सेउटा
ग्राम-पो॰ - सेउटा, आजमगढ़ (उ.प्र.)

*भारतीय रेल से सुराही बेदखल हो चुकी है। स्टेशनों पर सुराहियाँ और मटके अब नहीं दिखते। आनलाइन टिकटों ने, खिड़की से खरीदी टिकट और स्टेशन पर रिजर्वेशन चार्ट का महत्व घट गया है। पुराने संदर्भों के साथ यात्रा स्मरण - **जितेन्द्र जितांशु***

मई का महीना था। भीषण डरावनी गर्मी पड़ रही थी। पछुआ हवा का तप्त झोंका तन-मन झुलसा रहा था। धरती तवे की भाँति जल रही थी। आकाश चिन्गारी उलग रहा था। विद्यालय बंद हो गये थे। गाँव जाने को मन उतावला था। ट्रेन का टिकट दो महीना पहले कट चुका था। समय जाते देर नहीं लगती। यात्रा में परिवार के साथ खाने पीने की व्यवस्था समुचित करनी पड़ती है। गर्मी में सुराही का पानी शीतल मधुर होता है। इसलिए सुराही बाजार से लाया। श्रीमती ने लाल कपड़े से उसे ढँक दिया। नियत दिन टैक्सी से कोलकाता रेलवे स्टेशन पहुँचा। यहीं से जम्मूतवी छूटती है। ट्रेन प्लेटफार्म पर रूकी। चहल -पहल बढ़ गई। प्रवेश के लिए कोलाहल तीव्र होता जा रहा था। आरक्षण चार्ट लगते ही बच्चों के साथ सीट पर पहुँच गया। सामान सीट के नीचे और जंगल के पास नीचे सुराही ठीक से रखकर कपड़े से ढँके दिया गया। भीतर की गर्मी साँसें उखाड़ दे रही थी। तन मन व्याकुल छटपटाने लगा। ट्रेन ने हार्न दिया, पंखे डगमगा उठे। धीरे धीरे तीव्र होते ही मन को थोड़ी शान्ति मिली। गाड़ी स्टेशन से धीरे धीरे आगे बढ़ रही थी। पसीना पोंछते-पोंछते गमछा भींग गया। ट्रेन के डिब्बे जलता तावा सदृश्य तप रहा था। पंखे की हवा भी गर्म हो गयी। एक तो दिन के बारह बजे ट्रेन छूटती है, दूसरे पठारी अंचल में आते-जाते आग की भट्टी बनती है। पठारी भू-भाग जल के अभाव में दम तोड़ने लगता है। अयस्कों के भण्डार अधर चटकारने लगते हैं। ट्रेन के भीतर हाय-हाय मची है। बाहर खेत मुख बाए निहार रहे हैं। पेड़-पौधे पीछे की तरफ भाग रहे थे। धरती वीरान, रास्ता सुनसान कोई शब्द नहीं। ट्रेन द्रुतगति से दौड़ रही थी। सूरज धरती को जलाना देना चाहता था। बोतलों का पानी अदहन हो गए। लू का झोंका तालू चटका रहा था। गर्मी कहती देखो मेरी ताण्डवी तान।

हमारे बर्थ के सामने एक ही परिवार के भी तीन बर्थ थे। एक वृद्ध, युवा पुत्री, पुत्रवधू एवं दो छोटे शिशु क्रमशः एक वर्ष और चार वर्ष के थे। साथ लाए डिब्बे का जल गर्म होने के कारण बच्चे प्यास से तड़फड़ाने लगे। नववधू घूँघट काढ़े बच्चो को चुप कराने में व्यस्त थी। कभी पंखा झलती कभी पुचकारती। वृद्ध की पुत्री भी बच्चों के देखरेख में ही व्यस्त रही। आदमी की भीड़ के, दूषित भाष्य से आदमी अण्डे की तरह उबल रहें थे। अब तक मैं अखबार पढ़ने में व्यस्त रहा। गर्मी में बरबस मुख से आह निकल पड़ती। पसीना पोंछते-पोंछते उससे भी दुर्गन्ध आने लगी। गमछा भींग गया।

सामने बैठे वृद्ध कुछ पूछने या बातचीत की मुद्रा में आ गए। अवसर देख पूछ बैठे। कहाँ तक जाना है? मैं भी समय व्यतीत करने के लिए, साथ-साथ सुखद यात्रा हेतु बातचीत में तल्लीन हुआ। मुझे शाहगंज उत्तर प्रदेश तक जाना है और वहाँ से ट्रेन बदलकर आजमगढ़ जनपद तक जाना है। वे तुरन्त बोल उठे। मुझे भी आप से एक स्टेशन आगे मालीपुर तक जाना है, यात्रा में सुख-दुख बाँटते चलेंगे। मन में सोचा, विचारों के आदान प्रदान से समय काटता चला जाता है और हृदय चिन्ता, उलझन से दूर रहता है। आप कलकत्ते में क्या करते है? यहाँ नौकरी करता हूँ। किसी जूट मिल में या कारखाने में नौकरी करते हैं ? कारखाने में नहीं एक विद्यालय में अध्यापक हूँ, अध्यापक हैं। वे थोड़ा चौक उठे थे। मुझे उनके मन की बात समझते देर नहीं लगी। शायद उन्हें मेरी काली कलुटी देह देखकर आश्चर्य हुआ।

हाँ, अध्यापक हूँ, ग्रीष्मावकाश में परिवार के साथ जन्म स्थान जा रहा हूँ। गाँव में खेती बारी होगी। बहुत थोड़ी सी भूमि है। किसी प्रकार भरण-पोषण होता होगा? हाँ, मेहनत मजदूरी से जीवन कटता जा रहा है। और कुछ तो होगा ? हाँ घर है,

माताजी हैं, छोटे बच्चे हैं।

बातों-बातों में गर्मी कट रही थी। उनके बच्चों की रोते-रोते आँखें लाल हो गई। बड़ा बच्चा पानी -पानी कह रहा था। मेरी बेटी सरिता कहने लगी। सुराही का पानी पिला दीजिए, बाबू चुप हो जाएंगे। किन्तु बूढ़ा कनखियों से मना कर देता था। मनुष्य का चेहरा हाव-भाव मन की बातें कह देते हैं। संदेह और कुरीतियाँ कभी-कभी मन में हीन भावना भरती है। इसी के कारण मनुष्य क्रूर, हिंसक और अभिमान से ग्रसित हो जाता है। अहं, ज्ञान और विवेक को निगल जाता है। नव वधू पीछे मुड़ छाती से बच्चे को चिपकाती किन्तु वह रो ही रहा था। बूढ़े सज्जन प्रश्न पर प्रश्न पूछ रहे थे। आस-पास वाले चुपचाप बातों का आनन्द ले रहे थे। बगल वाली सीट से एक महिला उठी, बोली मास्टर जी एक गिलास पानी ले तू। श्रीमती ने कहा ... खुशी -खुशी जल ले लीजिए। महिला जल ले चली गई। बूढे की बेटी भी लेना चाहती थी किन्तु भय से साहस नहीं कर सकी। गिलास हाथ की हाथ में रह गयी। बूढ़ा पुन: पूछ बैठा।

आप कौन लोग हैं ?

एक आदमी हूँ।

सो तो देख रहा हूँ, मेरा मतलब यह नहीं है।

तब क्या कहना चाहते हैं ?

आप किस कौम के हैं ?

आप इतना घुमा फिरा बातों क्यों करते हैं? सीधे-सीधे पूछ लीजिए, जिज्ञासा शांत हो जाएगी।

मैं जाति से शुद्ध चमार हूँ।

सभी अचकचा कर चौंक उठे। बूढ़ा झेंप सिर नीचे किया। तभी बगल बर्थ से एक बच्चा जल लेने आ गया। बेटी सरिता तुरन्त सुराही से जल दे दी। वह खुशी खुशी अपनी सीट पर चला गया। बूढ़े उठे और बाथरूम की तरफ चले गये। नववधू का घूँघट हट गया। वह सरिता से जल मांगी, बच्चों को जल पिलाई स्वयं पी ली। बच्चे जल पीते ही शांत हो गए। मुखड़े पर शान्ति झलकने लगी। आशा जल पीलो, जान है तो जहान है। सरिता ने गिलास में जल भर दिया। आशा जल पीकर माथा सहलाने लगी। सुराही का पानी अमृत जल है, मन शीतल हुआ। प्राण निकलने वाला था। इस जल ने जीवन दे दिया। जल न तू शूद्र है, न तो ब्राह्मण, यह तो सदा शुद्ध जीवन है। जल पी लेने के बाद नन्हा बच्चा सो गया। नववधू कहने लगी। हमलोग जाति से ब्राह्मण हैं। मेरे पति मारवाड़ी के यहाँ नौकरी करते हैं। आशा वहीं से इन्टर की फाइनल बोर्ड परीक्षा अभी दी है। विवाह की बात है, इसलिए बूढ़े ले जाने के लिए आए। सदा गाँव में रहें हैं। कभी बाहर-विदेश नहीं गये। प्राचीन रीति रिवाज मन में भरे हैं। ज्ञान-विज्ञान से कुछ भी लेना-देना नहीं है। पढ़े कम गढ़े हुए अधिक हैं। बाथरूम गये बहुत देर हो गयी, अब तक नहीं आए। रास्ता भूल गए। आशा देखने गई तो दूसरी बोगी से पूछते आ रहे थे। आशा बाँह पकड़ सीट पर लायी। बच्चों को शान्त देख हृदय शीतल हुआ। बाथरूम का पानी अदहन हो गया है। छूते ही हाथ जल रहा है। आँखों से लुत्कारी निकल रही, पैर लड़खड़ा उठे हैं। सिर पीछे सीट से टिका चुके हैं। सरिता तत्काल ग्लूकोन डी गिलास ने डाल कर आशा को पकड़ा दी। सुराही के पानी से घोल बनाया गया।

शीतल जल गले के नीचे उतरते ही तन-मन में नई स्फूर्ति, चेतन आई। आशा गमछा भिगों मुखमंडल साफ कर रही थी। कुछ गर्मी से राहत मिली। ठीक ढंग से उठ बैठ गये। यह गर्मी नहीं जान लेने वाली है। तालु चटक गया, सिर चक्कर देने लगा। पानी ने जीवन बचा लिया। बेटी एक गिलास और पानी देना। आशा के मुखमंडल पर मधुर मुस्कान खिल उठी। एक-एक कर तीन गिला जल पी गए। आज अभी नया जन्म हुआ है। हिय सुलगता रहा, कुम्हार के आँवा की तरह। अपनी ही शरीर पर अपना अधिकार नहीं रह गया। असहाय सा घूमता रहा। इस गाड़ी की तरह कलेजा धड़धड़ा रहा था। अन्तिम समय जानकर अहंकार बर्फ की तरह धीरे धीरे पिघल गया। कोलकाता नदियों का मिलन स्थल है। सागर सभी को अपने में समाहित कर लेता है। सागर के पास रहने वाले सागर हो जाते हैं स्वयं अपने जैसा बना लेते हैं। पुराने रीतिरिवाज मन में कुंडली मारे बैठे हैं। मनुष्य को मनुष्य होने नहीं देते। एक सुराही के पानी कितने लोगों को राहत दी। इस जल ने जीवन देते हुए मन की मैल धो दिया। मैं

आज तक अपने रीतिरिवाज, परम्परा, विश्वास एवं रूढियों पर अभिमान करता रहा, किन्तु साधारण लोगों के बारे में अज्ञान, अहं तथा पूर्वाग्रहों से प्रेरित रहा। संसार, बँटा बिखरा हुआ हैं। जहाँ पर अनेकता व जातीयता अभिशाप बन कर रह गई है। किसी की अनगढ़ भाषा और जाति बर्दाश्त नहीं होती है। हमारी दकियानूसी सोच समाज को खा रही है। जल किसी व्यक्ति विशेष के घड़े में है तो वह उतना ही पवित्र है जितना की नदी, तालाब या हैण्डपैम्प का जल पवित्र है। जल जीवन है। हमें अपने विचार को पवित्र रखना है। शुद्ध मन में ही पवित्र शुद्ध विचार पनपा करते हैं। आज चौथेपन में समझा कि शास्त्रों में क्यों मनुर्भव लिखा है, अर्थात् मनुष्य बनो। मनुष्य की पहचान सुकर्मों से होती है। सुराही जल से प्राण रक्षा हुई। ट्रेन द्रुत गति से अपने गन्तव्य स्थल की ओर दौड़ रही थी।

सम्मान एवं कवि गोष्ठी

6 मई को तिरंगा अगम काव्य संगम (स्व॰ अगम शर्मा जी) की मासिक काव्य गोष्ठी काशीपुर स्थित आदर्श युवक संघ के संयुक्त तत्ववधान में ''आयुस भवन सभागार में कुँवर वीर सिंह 'मार्तण्ड जी की अध्यक्षता' में की गई मुख्य अतिथि थे सईद आजर। गोष्ठी संचालन सदीनामा पत्रिका के सम्पादक जीतेन्द्र जितांशु ने किया। इस अवसर पर काव्य पाठ करने वाले कवि एवं शायर : ज्ञान प्रकाश पांडे, सर्वेश कुमार, रणविजय श्रीवास्तव, नन्द लाल रौशन, विश्वजीत शर्मा, यदु नन्दन प्रसाद 'अशांत', दीपक कुमार सिंह, दिनेश चन्द प्रसाद 'दीनेश'। भानुप्रताप त्रिपाठी, सरल, अनिल उपाध्याय, जतिब हयाल, मंजू तिलक, विकास अत्रि, मीनाक्षी सांगानेरिया, सईद आजर, शरीक रियाज, युसूफ अख्तर, वदूद आलम आफाकी, अब्दुल फहीम, शकील गोंडवी,मुमताज मुजफ्फरपुरी, फौजिया अख्तर रिदा, रणजीत भारती, प्रदीप कुमार धानुक, सोहेल खान सौहेल, नजीर राही, सरवर दिलकश, शाहिद हुसैन शाहिद, रूह उल अमीन, अंजार ऊल बशर आदि इस अवसर पर मारिया शमीम, तारक वकील, विजय जैसवारा आदि उपस्थिति थे। यह जानकारी कार्यक्रम के संयोजक शम्भूलाल जालान ''पनिराला'' ने दी। इस अवसर पर आजमगढ़ से पधारे कवि एवं सदीनामा के उप-सम्पादक यदुनाथ सेउटा 'अशांत' का नागरिक अभिनंदन किया गया।

पेंटिंग खरीदना बेचना भी व्यवसाय है

इस माह की पेंटिंग

THE SOLIEL

साइज :- 18 इंच ×18 इंच

मीडियम : एक्रिलिक आन कैनवास

न्यूनतम बिडिग मूल्य : **12,000.00**

बिडिंग की अन्तिम तिथि : 30 जून 2018

आपको पेंटिंग के साथ मिलेंगें :-

(i) Certificate of authentification.

(ii) Sale receipt.

(iii) सदीनामा की पाँच वर्ष की सदस्यता

सम्पर्क करें - 9231845289

ई-मेल : sadinama2000@gmail.com

इस माह की चित्रकार– सुलोचना सारस्वत, विश्व भारती विश्वविद्यालय फेम।

आम के आम गुठलियों के दाम

सदीनामा पत्रिका की एक और नयी पहल

250 दें – 300 लें।

तीन वर्ष तक घर बैठे सदीनामा पढ़ें (पोस्टल खर्च भी हमारा)

लाभ भी, ज्ञान भी

फार्म भरकर भेजें । (सिर्फ यही फार्म चलेगा जेरोक्स नहीं)

सदीनामा की सदस्यता संख्या : _____ नये सदस्य ☐

नाम : _____

पता : _____

मोबाईल : _____ ई-मेल : _____

सदस्यता शुल्क जमा करने की तारीख _____ RTGS No. : _____

सदस्यता शुल्क लौटाने की बैंक का नाम :_____

Account No. : _____ Types of Account : Saving ☐ Current ☐

Branch Name : _____ IFSC Code : _____

Adhar Card :- Cancelled Cheque No. _____

Name of Introducer _____ Membership No. : _____

Signature of Introducer ***Signature of Applicant***

अधिक जानकारी के लिए फोन / SMS / 9088968395 करें, Email - sadinama2000@gmail.com.

स्थान : तारीख :

महज कानून नहीं सामाजिक बदलाव जरूरी

बदसलूकी इस वक्त पूरे देश में मासूमों के साथ हो रही बदसलूकी की घटनाओं पर खासा गुस्सा है, लोग जगह-जगह प्रदर्शन कर रहे हैं और सरकार ने इस मुद्दे पर गहन चिंतन करते हुए एक अहम कदम उठाया है। उसने 'पाक्सो ऐक्ट' में बदलाव किया है, जिसके तहत अब 12 साल तक की बच्ची से बदसलूकी के दोषियों को मौत की सजा मिलेगी। सरकार की ओर से रखे गए इस प्रस्ताव को केन्द्रीय केबिनेट की मंजूरी मिल गई है।

किसी भी तरह की समस्या होने पर बच्चे फोन करें

1098

'पाक्सो एक्ट' या POCSO ACT

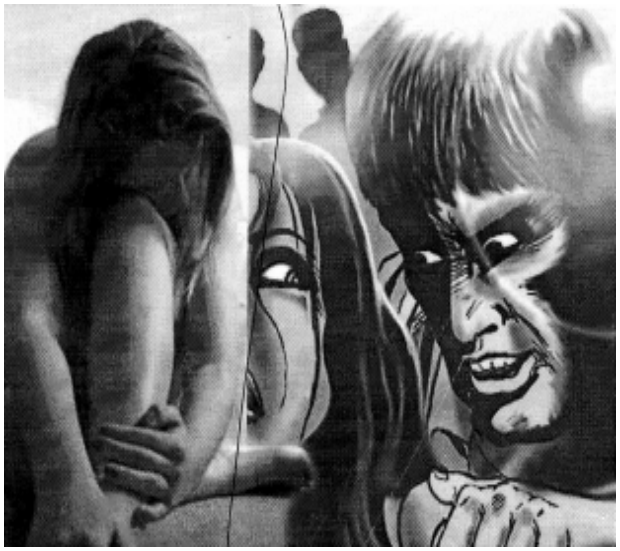

ये पोस्को क्या है ? Pocso का पूरा नाम है The Protection of Children from Sexual offences Act या प्रोटेक्शन ऑफ चिल्ड्रेन फ्राम सेक्सुअल अफेंसेस एक्ट। ये विशेष कानून सरकार ने साल 2012 में बनाया था। इस कानून के जरिए नाबालिग बच्चों के साथ होने वाले यौन अपराध और छेड़छाड़ के मामलों में कार्यवाही की जायेगी

गंभीर अपराधों से सुरक्षा प्रदान

यह एक्ट बच्चों को सेक्सुअल हैरेसमेंट, सेक्सुअल असॉल्ट और पोर्नोग्राफी जैसे गंभीर अपराधों से सुरक्षा प्रदान करता है। वर्ष 2012 में बनाए गए इस कानून के तहत अलग-अलग अपराध के लिए अलग-अलग सजा तय की गई है।

यह अधिनियम पूरे भारत पर लागू होता है

यह अधिनियम पूरे भारत पर लागू होता है, पॉक्सो कानून के तहत सभी अपराधों की सुनवाई, एक विशेष न्यायालय द्वारा कैमरे के सामने बच्चे के माता-पिता या जिन लोगों पर बच्चा भरोसा करता है, उनकी उपस्थिति में होती है।

यदि किसी बच्चे का यौन शोषण हुआ है तो....

यदि अभियुक्त एक किशोर (टीनएज) है, तो उसके ऊपर किशोर न्यायालय अधिनियम में केस चलाया जाएगा। इस इस एक्ट में ये भी नियम है कि यदि

कोई व्यक्ति यह जानना चाहता है कि किसी बच्चे के साथ गलत कृत्य हुआ तो उसके इसकी रिपोर्ट नजदीकी थाने में देनी चाहिए, यदि वे ऐसा नहीं करता है तो उसे 6 महीने तक की जेल हो सकती है।

बच्चे की मेडिकल जांच के लिए भी प्रावधान

पुलिस की यह जिम्मेदारी बनती है कि मामले को 24 घंटे के अन्दर बाल कल्याण समिति की निगरानी में लायें ताकि CWC बच्चे की सुरक्षा और संरक्षण के लिए जरूरी कदम उठा सके। इस अधिनियम में बच्चे की मेडिकल जाँच के लिए प्रावधान भी किए गए हैं, जो कि इस तरह की हो ताकि बच्चे के लिए कम से कम पीड़ादायक हो।

मेडिकल जांच बच्चे के माता-पिता या किसी अन्य व्यक्ति की उपस्थिति में किया जाना चाहिए, जिस पर बच्चे का विश्वास हो, और पीड़ित अगर लड़की है तो उसकी मेडिकल जांच महिला चिकित्सक द्वारा ही की जानी चाहिए।

इस केस की सुनवाई बंद कमरे में करने का प्रावधान है

इस केस की सुनवाई बंद कमरे में करने का प्रावधान है और इस दौरान बच्चे की पहचान गुप्त रखना भी जरूरी है। स्पेशल कोर्ट, उस बच्चे को दिए जाने वाली मुआवजे की राशि भी तय कर सकता है।

सदीनामा की मुहिम
बचपन बचाए से जुड़े
सिर्फ मिसकॉल / whatsup करें -
9231845289

परिवार के किसी भी सदस्य के
अस्वाभाविक व्यवहार / आदत को गंभीरता से ले
सदीनामा को फोन करें।
(अपनी सदस्यता संख्या बताते हुए सम्पर्क करें)

Mobile :
9051525679

E-mail :
sadinama2000@gmail.com

सदस्यता के लिए
9231845289

अच्छे मानसिक स्वास्थ्य और बुरी आदतों से मुक्ति के लिए सदीनामा की पहल

''बमुलियनः उत्तरी भारत की एक उप-हिमालयी पेलियोलिथिक संस्कृति''

डॉ॰ अनेक राम सांख्यान, वरिष्ठ मानवविज्ञानी, 8894166565
लेखक कोलकाता में एन्थ्रेपोलोजीकल इंडिया में रहे हैं - सं॰

हिमालच प्रदेश के घुमारवीं-बम सीरखड़ क्षेत्र से बहुत दुर्लभ पाषाण-कालीन संस्कृति की एक अनोखी खोज प्रकाशित की है जो उत्तर भारत में इस तरह की सर्वप्रथम खोज और समस्त भारत में अद्‌वितीय हैं। इस संस्कृति को डॉ॰ सांख्यान ने 'बामुलियन' की एक नई पहचान दी है।

'बमुलियन' पाषाण-कालीन संस्कृति की एक विशिष्ट एशुलियन संस्कृति है जिसमें विविध प्रकार और आकार के असंख्य विशिष्ट पाषाण-युग उपकरण पाए गए हैं। डॉ अनेक राम सांख्यान की दृष्टि में इस क्षेत्र में पहली बार वर्ष 2010 में एशियुलियन उपकरण आए थे। 2014 में उन्होंने इस तरह के कई और औजार एकत्र किए जो 2017 में "International Journal of Current Research" में प्रकाशित किए थे। लेकिन, इस तरह के औजार 450 की बड़ी संख्या में उन्होंने नवंबर-2017 से फरवरी 2018 वर्ष के दौरान खोजे, जिनमें अकेले बम क्षेत्र से 300 से अधिक उपकरणों का सबसे बड़ा हिस्सा है, जिसने इस संस्कृति को 'बमुलियन' की एक नई पहचान दी है।

'बमुलियन' पाषाण उपकरणों को डॉ सांख्यान ने 14 मुख्य श्रेणियों में वर्गीकृत किया है। इनमें हैंडेक्स की संख्या (160) क्लीवरर्स (82) से दोगुनी है, इसके बाद तीर और भाले प्रक्षेप्य उपकरण (40) चॉपर (24) से अधिक है। कई प्रकार आकार हैंडेक्स पाए गए, जिनमें अधिक अंडाकार (54) हैं, इनके बाद नाशपति-आकार के (34), बादाम आकार के (26) और हृदयाकार (14) के हैं, इनकी छंटनी अधिकतर एक तरफ से ही की गई है, लेकिन दिखने में बाइफेसियल (द्विपक्षीय) लगते हैं। यह दिलचस्प है कि विशाल आकार के हैंडेक्स. क्लीवर और चॉपर अक्सर पाए गए, जिनमें से कुछ नमूने ही एकत्र किए गए। लघु काटने के उपकरणों में अस्तरवाले चाकू तथा अंत-स्क्रैपर्स (31) काफी संख्या में पाए गए। पहली बार अनेक दस्ता-कुल्हाड़ियाँ दस्ता-फावड़े, खुरपे और कुदालियाँ, सिकल (दरांती), सॉ-कटर, छैनियाँ आदि पाषाण उपकरण पाए गए। इनके अतिरिक्त अब तक भारत में अज्ञात परिष्कृत 'लॉरेल पते' जैसे पतले 'विशाल-फ्लेक उपकरण' या हथियार उन्हें मिले हैं, जो अत्यधिक महत्वपूर्ण नई खोज है और 'बमुलियन' की एक अपनी पहचान है।

उपकरण प्रकारों की विशिष्टता, समृद्धि और विविधता पर विचार करते हुए, डॉ॰ सांख्यान ने इसे 'बम' गांव से 'बमुलियन'नामित किया। इस तरह की अनूठी प्रागैतिहासिक विविधता व विशिष्ट विशेषताएं, पंजाब के अट्‌टबारपुर एशियुलिन उद्‌योग में भी नहीं मिली है, जहां क्लीवर हैंडेक्स से लगभग दुगने हैं, भाले और तीर या दस्ता-कुल्हाड़ियाँ, साँ-कटर, छैनियाँ, विशाल हैडेक्स, क्लीवर और चॉपर बिल्कुल नहीं है। केन्द्रीय नर्मदा घाटी समेत भारतीय प्रायद्विपीय (पेनीन्सुलर) स्थलों से इस तरह के औजारों की सूचना नहीं मिली हैं,

जहाँ डॉ॰ सांख्यान ने लगभग तीन दशकों तक काम किया है और भारतीय मानवविज्ञान, सर्वेक्षण, कोलकाता में 9000 से अधिक एशियुलियन कलाकृतियों और 1500 जीवाश्मों का संचय किया है।

बमुलियन पाषाण-युग उद्योग की अनूठी विविधता प्रागैतिहासिक मनुष्य द्वार अपनाए गए विभिन्न व्यवसायों को प्रतिबिंबित करती है। बेशक हैंडेक्स निकट प्रत्यक्ष-युद्ध दर्शाता है, किन्तु, एक कुशल शिकारी के रूप में मसुलीयन मानव ने दूरी से भाले और तीर-धनुष का भी पसंदीदा उपयोग किया है। हमारी आधुनिक लौह-उपकरण, पाषाण दास्ता-कुल्हाड़ियाँ, सॉ-कटर, छैनियाँ, बड़े क्लीवर आदि, बमुलियन की अनूठी नकल है, परिष्कृत ''लारेल पत्ते'' बड़े ब्लेड के विशेष उपकरण या हथियार हैं। इस प्रकार की विविधता विभिन्न प्रकार के विशेष व्यवसायों की विविधता को दर्शाती है। उदाहरण के लिए, इनमें पाषाण दस्ता-फावड़े और कुदालियाँ कंद-मूल खोदने और कुछ खाद्य पौधों के प्राचार्य वृक्षारोपण के लिए भूमि-कार्य या मिट्टी की प्रसंस्करण के संकेतक है। बमुलियनों ने पशु-मांस के पूरक के लिए कुछ प्रकार के खाद्य उत्पादन का अभ्यास किया, जो आदिम खाद्य रहा होगा। दरांती से पौधों या फसल की कटाई का संकेत मिलता है। दस्ता-कुल्हाड़ियाँ, सॉ-कटर, छैनियाँ, बड़े क्लीवर आदि उपकरण लकड़ी काटने का काम आदि के सूचक हैं। विविधता और नए तकनीकी नवाचारों से संकेत मिलता है कि बामुलियन लोग लंबे समय से इस क्षेत्र में रहते हैं। संभवत: उन्होंने अस्थायी / स्थायी झोपड़ियों को भी बनाया होगा। शिवालिक तलछट चट्टान परतों के आधार पर यह अवधि आज से लगभग 6 लाख वर्ष पूर्व से 50,000 वर्ष पूर्व से अधिक हो सकती है।

वर्तमान अध्ययन कार्य केवल एक शुरुआत है। हिमाचल प्रदेश में इस अनूठी प्रागैतिहासिक संस्कृति, इसके विस्तार, प्रवासन के मार्ग, जैव-सांस्कृतिक विकास और आधुनिक मानव जीन-पूल में योगदान, या विलुप्त होने का कारण आदि जानने के लिए, अधिक शोध की आवश्यकता है। उपर्युक्त वर्णित पाषाण-युग उपकरण सांस्कृतिक निरंतरता के संकेतक हैं। आधुनिक लोगों ने बामुलियन तकनीकी नवाचारों से बहुत कुछ सीखा है।

गत - वर्ष डॉ॰ सांख्यान द्वारा घुमारवीं सीर खड़ क्षेत्र से एक बहुत दुर्लभ चित्रित नदी गोल पत्थर और एक भ्रूण के आकार का पाषाण लोलक (नैक-पैंडेंट) खोजा गया था जो हमें प्रागैतिहासिक मानव की पोर्टबल (सुवाहय) 50,000 वर्ष पहले पुराकला के प्रारम्भ और विकास का संकेत देता है। यह उल्लेखनीय है कि घुमारवी-हरिताल्यांगर शिवालिक क्षेत्र पहले से ही मायोसिन एप्स और होमिनिड्स शिवापिथेकस, जयगांटोपिथेकस और कृष्णापिथेकस के जीवाश्म अवशेषों के लिए जाना जाता है, जिसके लिए डॉ॰ सांख्यान का भी महत्वपूर्ण योगदान है। हालांकि, पाषाण-युग मानव के अवशेषों का अभी इस क्षेत्र से इंतजार है, वे दक्षिण एशिया में अभी तक अधिकतर डॉ॰ सांख्यान द्वारा नर्मदा घाटी से ही इकट्ठे किए गए हैं। डॉ॰ सांख्यान द्वारा 2012 वर्ष में पोलियो रिसर्च सोसाइटी की स्थापना के बाद गत - वर्ष घुमारवीं में पेलियों-म्युजियम स्थापित किया गया था। इनके तहत भविष्य में बायो-स्ट्रैटिग्राफी, काल निर्धारित करना और पेलियोकोलॉजी (पुरा-पारिस्थितिकी) अध्ययनों को प्राथमिकता दी जाएगी।

❑ कहानी ❑

मकान

सुशांत सुप्रिय, A-5001,
गौड़ ग्रीन सिटी, वैभव खंड, इंदिरापुरम,
ग़ाज़ियाबाद-201014 (उ.प्र.)
मो॰ : 8512070086
ई-मेल : sushant1968@gmail.com

''शाबजी, ये मकान कई साल से खाली पड़ा। ये मकान आप क्यूँ खरीदा ? ये मकान में भूत रहता।'' रिक्शे पर से मेरा सामान उतार कर गली का गोरखा चौकीदार बोला।

मैं मुस्कुरा दिया।

नौकरी से रिटायर होने के बाद जब मैंने रहने के लिए शहर के इस मोहल्ले में एक मकान खरीदने का इरादा किया तो गली वालों ने भी मुझे यही बात बताई।

''भाई साहब, दिस प्लेस इज हांटेड। भुतहा मकान खरीद कर आप गलती कर रहे हैं।''

पर भूत-वूत में मेरा यकीन कभी नहीं रहा। सारा जीवन इसी शहर में बिताया। इसलिए इस शहर से मोह हो गया था। पत्नी कुछ साल पहले दिल का दौरा पड़ने पर गुजर गई। बच्चे कब पंख लगाकर फुर्र हो गए, पता ही नहीं चला। यह मकान सस्ते में मिल रहा था, सो खरीद लिया। सोचा, जीवन की साँझ यहीं कट जायेगी।

मैंने लोहे के बड़ दरवाजे पर लटका ताला खोला और भीतर आ गया। लॉन में बेतरतीबी से उग आई लम्बी घास किसी जंगल का लघु- संस्करण लग रही थी।

बंद गली के इस आखरी मकान में कबूतरों और चमगादड़ों ने डेरा जमाया हुआ था। गोरखा कही से दो लड़के पकड़ लाया। दोनों यहाँ सफाई करने की बात से कुछ आशँकित लग रहे थे। पर पैसों के लालच में दोनों ने दो-तीन घंटों में ही झाड़-पोंछ कर मकान को रहने लायक बना दिया।

पहले मुझे लगा कि शायद ये आवाजें मेरा भ्रम हैं। मेरे थके-बूढे दिमाग की उपज हैं। शायद मैं लोगों द्वारा कही गई बातों की रात में फिर से कल्पना करता हूँ। पर ये आवाजें तो सभी गली वालों ने भी सुनी थीं। कहीं - न-कहीं कुछ तो था।

फिर अक्सर बीच रात में मेरी नींद आवाजें सुनकर टूटने लगी। कभी-कभी मुझे ऐसा लगता जैसे कोई बड़े दारूण स्वर में रो रहा हो। पर पूरा मकान छानने पर भी कुछ नहीं मिलता।

बचपन से मैं मानता आया हूँ कि भूत-वूत कुछ नहीं होते। ये डरपोक लोगों के वहम भर हैं।

तो क्या उम्र के इस पड़ाव पर आ कर मेरी यह सोच गलत साबित होने वाली थी?

एक रात इसी तरह दो बजे के आस-पास मेरी नींद खुली। बगल वाले कमरे में वही खुसर-फुसर चल रही थी। बीच-बीच में कोई सिसकियाँ ले रहा था।

इस बार मैं बिना टॉर्च या बत्ती जलाए दबे पाँव बिस्तर से उतरा। दोनों कमरे के बीच के दरवाजे के 'की-होल' से मैंने बगलवाले कमरे में आँख गड़ा कर देखना चाहा। कुछ दिखाई नहीं दिया। भीतर घुप्प अंधेरा था। पर बातचीत और रुदन अब भी जारी था। इस बार मैंने अपना कान 'की-होल' से सटा कर बातचीत सुनने का प्रयास किया।

घोर आश्चर्य। वे मेरे ही बारे में बातें कर रहे थें।

''....पिछले परिवार के चले जाने के बाद बरसो से हम अनाथ थे। जब सुना कि कोई नया आदमी हमें

खरीद रहा है तो उम्मीद बँधी थी कि यहाँ फिर से रौनक लौट आएगी, चहल-पहल लौट आएगी, जीवन लौट आएगा। पर अफसोस। ये साहब तो अकेले यहाँ रहने आ गए। ऊपर से बूढ़े हैं। पता नहीं कब क्या हो जाए। भगवान जाने फिर से हमारे दिन कब फिरेंगे? फिर से यहाँ खुशियाँ कब लौटेंगी....?''

मैं जितना सुनता गया, उतना हैरान होता गया। आप यकीन नहीं करेंगे। मकान की दीवारें आपस में बातें कर रही थीं। क्या यह संभव था?

उस रात को मैं काफी देर तक उन्हें बातें करते हुए सुनता रहा। उस रात ही नहीं, अगली कई रातों में भी। और मेरा शक यकीन में बदलता चला गया कि दीवारें बातें कर रही थीं। मकान बोल रहा था। यह तो सुना था कि दीवारों के भी कान होते हैं पर यह पहली बार पता चला कि दीवारों के मुँह भी होते हैं।

इस बीच पड़ोस में रहने वाले शर्मा दंपत्ति से परिचय हुआ और उन्होंने दोपहर के खाने पर मुझे अपने यहाँ बुला लिया। मैं भी कुछ थक-सा गया था। इसलिए हाँ कर दी।

नहा-धोकर मैं शर्माजी के यहाँ पंहुँचा। शर्मा दंपत्ति बड़े मिलनसार स्वभाव के लगे। खाना खाते हुए श्री शर्मा ने मेरे मकान में पहले रहने वालों के बारे में बड़ी दारूण कहानी सुनाई।

पहले वहाँ देवगन परिवार रहता था। उस परिवार के सदस्य व्यापारी थे। किसी चीज के इम्पोर्ट-एक्सपोर्ट का व्यवसाय करते थे। परिवार के मुखिया की किसी ने ऑफिस में घुसकर हत्या कर दी। कोई व्यावसायिक झगड़ा था। पत्नी सदमे से पागल हो गई। जवान बेटी के प्रेमी ने उसे धोखा दिया तो उसने बेडरूम के पंखे से लटकर आत्म हत्या कर ली। बेटा-बहू बचे थे। उन्होंने मकान को अभिशप्त मानकर उसे किसी को औने-पौने दाम पर बेंच कर उससे पीछा छुड़ाया। जिसे यह मकान बेचा गया उसने भी बाद में घाटे पर ही मकान उस व्यक्ति को बेच दिया जिससे मैंने इसे खरीदा था।

शर्मा दंपत्ति ने शुभ-चिंतक होने के नाते मुझे भी सलाह दी कि मैं इस मकान में रहने का इरादा त्याग दूँ और पहला मौका मिलते ही इसे किसी को बेचकर कोई सही मकान खरीदूँ। उनके अनुसार भी यह मकान तो भुतहा था, अपशकुनी था। रात में खाली मकान में से लोगों के बातें करनी की, रोने की आवाजें आती थीं। इस मकान में रहने वालों का कभी भला नहीं हो सकता था। वगैरह।

मैंने मुस्कुरा कर उनकी बातों को सुना और कहा कि मैं कुछ समय इस मकान में रहकर स्वयं इसका रहस्य जानना चाहूँगा। आखिर इस मकान में ऐसा क्या है कि लोग इसे भुतहा बताते हैं? व्यक्तिगत तौर पर मुझे शकुन-अपशकुन जैसी बातों में कोई यकीन नहीं है।

मैंने मकान में रहना शुरु किया। वाकई कई बार बीच रात में अजनबी लोगों की बातचीत की आवाजें सुनकर मेरी नीद खुल जाती। ऐसा लगता जैसे साथ वाले कमरे में कोई खुसुर-फुसुर कर रहा हो। पर जब मैं टॉर्च लेकर कमरे में पहुँचता तो वहाँ कोई नहीं मिलता। केवल सन्नाटा वहाँ मेरा स्वागत करता।

दस-पंद्रह दिन बाद एक दिन अचानक बड़े बेटे की चिट्ठी मिली कि उसका ट्रांसफर इसी शहर में हो गया है और वह पत्नी और बच्चे के साथ जल्दी ही यहाँ रहने आ रहा था। मेरी खुशी का ठिकाना न रहा।

और फिर वह दिन भी आ पहुँचा। मैंने बेटे, बहू और पोते का खुले दिल से स्वागत किया। रहने की

ISSN : 2454-2121
R.N. No. WBHIN/2000/1974
Central Govt. Postal Regd. No. TECH/WB/RNP/SP-003/2014-16

1 से 30 जून
कुल पेज : 28

मूल्य : 5.00
सदीनामा
E-mail : jjitanshu@yahoo.com

कोई समस्या नहीं थीं। दो-मंजिला मकान था। ऊपर वाली मंजिल पर बेटे, बहू और पोते के रहने का बंदोबस्त हो गया।

पर बेटे ने भी मकान के बारे में कुछ उड़ती-उड़ती सी बातें सुनी थीं। वह कुछ आशंकित था। कहने लगा, ''डैड, बच्चा छोटा है। आपकी बहू भी साथ है''कोई ऐसी-वैसी बात हो तो बता दीजिए। हम कोई मकान किराये पर ले लेंगे। हम यहाँ तभी रहेंगे अगर यहाँ रहना 'सेफ' हो।''

तब मैंने उसे आश्वस्त किया – ''यहाँ रहना बिल्कुल सुरक्षित है। मैं जो रह रहा हूँ इतने महीनों से यहाँ। मुझे कुछ हुआ क्या?''

देखते-ही-देखते मकान मेरे पोते की किलकारियों से गूँजने लगा।

उस रात फिर मेरी नींद बीच रात में टूट गई। बगल वाले कमरे में वही खुसर-फुसर हो रही थी। मैंने 'की-होल' से अपना कान सटाया। सिसकियों की जगह आज उल्लास भरे स्वर थे। दीवारें खुश थीं कि युवक, युवती और एक बच्चा अब यहाँ रहने आ गए थे। फिर अंधेरे में ही कोई धीमे, पर स्पष्ट स्वर में एक उमंग भरा गीत गुनगुनाने लगा।

पाठकों, हम सब एक ऐसे युग में जी रहे हैं जहाँ हांड़-मांस के अधिकांश लोगों की संवेदनाएँ मर गई हैं। उनकी आत्माएँ मर गई हैं। पर ईंट-पत्थर के मकान संवेदनशील हो गए हैं। उनमें जैसे आत्माएँ आ गई हैं। ये मकान शून्य में नहीं रहते बल्कि अपने यहाँ रहने वालों के जीवन से पूरी तरह जुड़ जाते हैं। हमारे हँसने पर ये हँसते हैं, हमारे रोने पर ये रोते हैं। अपने यहाँ रहने वाले बच्चे की किलकारी सुनकर ये भी किलकते हैं। अपने यहाँ रहने वाले ज्वर-ग्रस्त बूढ़े की खाँसी इन्हें भी बीमार कर देती है। आदमी चाहे पत्थर दिल हो गया हो, ईंट-पत्थर से बने ये मकान अब पत्थर-दिल नहीं रहना चाहते। वे धड़कन, स्पंदन, उल्लास और उमंग चाहते हैं। वे घर होना चाहते हैं। मेरे मकान में भी अब रौनक लौट आई थी। वह अब घर हो गया था।

मुद्रक, प्रकाशक एवं स्वत्वाधिकारी पुष्पमित्र शर्मा द्वारा डायमंड आर्ट प्रेस, 37ए, बैटिक स्ट्रीट, कोलकाता-69 से मुद्रित तथा
H-5, Govt. Qtrs. Budge Budge (बजबज), Kolkata-700137, 24Pgs(S). W.B. India प्रकाशित।
संपादक : जितेन्द्र जितांशु, 9231845289, **E-mail : jjitanshu@yahoo.com, R.N.1 No. WBHIN/2000/1974**